ch- बाजार

Q1. बाजार की परिभाषा दीजिए?

→ जनसाधारण की भाषा में बाजार का अर्थ उस स्थान से लिया जाता है जहाँ वस्तुओं के क्रेता और विक्रेता भौतिक रूप में एक ~~स्थान~~ साथ एकत्रित होकर वस्तुओं और सेवाओं का क्रय विक्रय करते हैं किन्तु अर्थशास्त्र में बाजार की परिभाषा में क्रेताओं और विक्रेताओं का भौतिक रूप से एक स्थान पर उपस्थित होना अनिवार्य नहीं, आधुनिक युग में वस्तुओं और सेवाओं का क्रय-विक्रय टेलीफोन अथवा अन्य संचार माध्यमों से भी सम्पन्न किया जाता है, समान्यता वस्तु के क्रय विक्रय में क्रेता और विक्रेता के मध्य सौदेबाजी का एक संघर्ष जारी रहता है और वस्तुओं का आदान-प्रदान तब तक सम्भव नहीं हो पाता जब तक क्रेता और विक्रेता दोनों एक ही कीमत स्वीकार करने को तैयार नहीं हो जाते।

Q2. पूर्ण प्रतियोगिता बाजार क्या है? इसकी विशेषताओं को विस्तार से समझाइए।

→ पूर्ण प्रतियोगिता :- पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह स्थिति होती है जिसमें एकसमान वस्तु में बहुत अधिक क्रेता एवं विक्रेता होते हैं, एक विक्रेता तथा एक विक्रेता बाजा[र] कीमत को प्रभावित नहीं कर पाते और यही कारण है कि पूर्ण प्रतियोगिता में बाजार में वस्तु की एक ही कीमत प्रचलित रहती है।

पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएँ :-

i) क्रेताओं और विक्रेताओं की संख्या :- पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में क्रेताओं और विक्रेताओं की संख्या बहुत अधिक होती है जिसके कारण कोई भी विक्रेता अथवा क्रेता बाजार कीमत को प्रभावित ~~करनी कर~~ नहीं कर

पाता, इस प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता में एक क्रेता अथवा एक विक्रेता बाजार में माग अथवा पूर्ति की दशाओं को प्रभावित नहीं कर सकता।

ii) वस्तु की समरूप इकाइयाँ :- सभी विक्रेताओं द्वारा बाजार में वस्तु की बेची जाने वाली इकाइयाँ एक समान होती है।

iii) फर्मों के प्रवेश व निष्कासन की स्वतंत्रता :- पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में कोई भी नई ~~फर्म~~ फर्म उद्योग में प्रवेश कर सकती है तथा कोई भी पुरानी फर्म उद्योग से बाहर जा सकती है, इसी प्रकार पूर्ण प्रतियोगिता में फर्मों के उद्योग में आने जाने पर को प्रतिबन्ध नहीं होता।

iv) बाजार दशाओं का पूर्ण ज्ञान — पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में क्रेताओं एवं विक्रेताओं को बाजार दशाओं का पूर्ण ज्ञान होता है, इस प्रकार कोई भी क्रेता वस्तु की प्रचलित कीमत से अधिक कीमत देकर वस्तु नहीं खरीदेगा, यही कारण है कि बाजार में वस्तु की एकसमान कीमत पायी जाती है।

v) साधनों की पूर्ण गतिशीलता :- पूर्ण प्रतियोगिता में उत्पत्ति के साधन बिना किसी व्यवधान के एक उद्योग से दूसरे उद्योग में (अथवा एक फर्म से दूसरी फर्म में) स्थानान्तरित किये जा सकते है।

vi) कोई यातायात लागत नहीं — पूर्ण प्रतियोगिता में यातायात लागत शून्य होती है जिसके कारण बाजार में एक कीमत प्रचलित रहती है।

Scanned with CamScanner

Q3. एकाधिकार बाजार क्या है? इसकी प्रमुख विशेषताएं बताइए।

एकाधिकार दो शब्दों से मिलकर बना है - एक+अधिकार अर्थात बाजार की वह स्थिति जब बाजार में वस्तु का केवल एक मात्र विक्रेता हो, एकाधिकारी बाजार दशा में वस्तु का एक अकेला विक्रेता होने के कारण विक्रेता का वस्तु की पूर्ति पर पूर्ण नियन्त्रण रहता है, विशुद्ध एकाधिकारी में वस्तु का निकट स्थानापन्न भी उपलब्ध नहीं होता।

एकाधिकारी बाजार में वस्तु का एक ही उत्पादक होने के कारण फर्म तथा उद्योग में कोई अन्तर नहीं होता अर्थात एकाधिकारी में उद्योग ही फर्म है अथवा फर्म ही उद्योग है।

एकाधिकार की विशेषताएं:-

i) एक विक्रेता और अधिक क्रेता:- एकाधिकारी बाजार में वस्तु की एकमात्र उत्पादक (अथवा विक्रेता) होता है जबकि क्रेताओं की संख्या अधिक होती है, क्रेताओं की संख्या अधिक होने के कारण क्रेता इस स्थिति में नहीं होते कि वे बाजार कीमत को प्रभावित कर सकें।

ii) निकट स्थानापन्नों की अभाव:- बाजार में एकाधिकारी का कोई निकट स्थानापन्न उपलब्ध नहीं होता जिसके फलस्वरूप एकाधिकारी वस्तु की माँग की आड़ी लोच शून्य होती है।

iii) एकाधिकारी स्वयं कीमत निर्धारक:- बाजार में अकेला उत्पादक एवं विक्रेता होने के कारण एकाधिकारी अपनी वस्तु की कीमत स्वयं तय करता है।

iv) नई फर्मों के प्रवेश पर प्रतिबन्ध:- एकाधिकारी में नई फर्मों का उत्पादन क्षेत्र में प्रवेश पूर्णतः प्रतिबन्धित होता है, एकाधिकारी फर्म का बाजार में कोई प्रतियोगिता नहीं होता।

Scanned with CamScanner